S.M. Zaheer Alam Teacher's Training College

BAHERA, DARBHANGA

L. N. MITHILA UNIVERSITY

KAMESHWAR NAGAR, DARBHANGA (BIHAR)

SESSIONAL WORK ASSIGNMENT

19/20

Course.....3.....

Topic.....

Subject.....Learning and Teaching.....

College Roll No. ....(30).....2220818.....

B.Ed. Session..2021-2023.....Year...2022.....

Reg. No. ..1722230951.....Year..2017.....

Awdhesh Kishore Yadav

Signature of Examiner

Ashok

Signature of Supervisor

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न (1) शिक्षक के व्यावसायिक विकास की आवश्यकता एवं अवसरों का वर्णन करें।

उत्तर - शिक्षक के व्यावसायिक विकास में दक्षताओं की आवश्यकता होती है जिससे शिक्षक को विकास के अवसर प्राप्त होते हैं। ये दक्षताएँ अग्र प्रकार हैं -

1.) विषयवस्तु संबंधी दक्षताएँ - किसी भी अध्यापक को अपने पढ़ाये जाने वाले विषय में पूर्ण अधिकार हो। यही नहीं, उसे संबंधित विषयों का ज्ञान हो। सामान्य ज्ञान तो होना ही चाहिए। अध्यापक जितना ही विषय पर अधिकार रखता होगा वह छात्रों के लिए उतना ही प्रिय बन जाता है। विषय में मास्टरी रखने वाला व्यक्ति ही अधिगम कराने में सक्षम होगा। यह क्रिया उसके लिए आनंद की क्रिया हो जाती है। इस हेतु अध्यापक को एक अच्छा पाठक, एक अच्छा अधिगमकर्ता होना चाहिए। पाठ-योजना बनाते समय भी छात्राध्यापक छात्राध्यापिकाओं को संदर्भ पुस्तकों का उल्लेख करने से आधुनिक एवं परिवर्धित ज्ञान का विकास होता है।

2.) सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षता - शिक्षक कार्य के लिए सबसे मुख्य कार्य जो अध्यापक को करना होता है वह है विषयवस्तु का सम्प्रेषण करना अर्थात ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाना, जिससे वे

ज्ञान को आत्मसात कर सके। तभी अधिगम का स्तर भी बढ़ती है। ज्ञान को स्मृति-पटल से चिन्तन-पटल तक ले जाता है, जहाँ सम्प्रेषण विधियों को लगाने पर अध्यापक को मनोवैज्ञानिक विधियों का भी ज्ञान होना जरूरी है। उसे अपनी योग्यता, क्षमता के अलावा छात्र की रुचि, योग्यता, पूर्वज्ञान एवं उन परिस्थितियों का जानना भी आवश्यक होता है, जो सम्प्रेषण को बढ़ाती है। अध्यापक का सम्प्रेषण उसकी प्रभावशीलता के द्वारा पूरा किया जा सकता है। कक्षा में यही अवयव पर निर्भर करता है, जैसे —

(i) अधिगमकर्ता की गुणात्मक स्थिति।
(ii) अध्यापक की सक्षमता।
(iii) कक्षागत वातावरण।
(iv) अधिगमकर्ता का प्रतिपुष्टि।
(v) व्यक्तिगत विकास एवं बालक की मन स्थिति, रुचि, वातावरण, ध्यान इत्यादि।

3.) अन्य शैक्षिक क्रियात्मक दक्षताएँ —

विषयवस्तु का सम्प्रेषण करने के लिए पाठ्येतर क्रियाओं की आवश्यकता होती है। हाथों द्वारा बनाये गये उपकरण, इधर-उधर जैसे संचालनों का उपयोग, वैज्ञानिक विधियों का उपयोग, सामाजिक पर्वों का आयोजन, जिससे हम श्रमण, श्रमदान, सहयोग, विचार-चिन्तन, आपसी

भाईचारा सीखते है, वही छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ अन्य गुणो को भी सीखते है जो भावात्मक प्रशिक्षण के रूप में उपयोगी होता है।

4.) शिक्षण-अधिगम सामग्री निर्माण में दक्षताएँ — अधिगम के सम्प्रेषण के लिए आवश्यक है कि छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ ऐसे उपकरण बनाने में दक्ष हो, जिससे बालक विषयवस्तु को शीघ्रता से सीखे, जैसे घड़ी न होने पर नाड़ी की धड़कन से समय का मापन करना।

भौतिक एवं अन्तरीय मूलको के गुणात्मक परीक्षण हेतु किप के उपकरण की उपकरण की आवश्यकता होती है। उपकरण काफी बड़ा होता है। प्रायः एक ही कक्षा के लिए एक उपकरण में इतनी भीड़ हो जाती है कि अनावश्यक समय इंतजाम में ही लग जाता है। लेखक ने एक Handy Kipp's apparatus विकसित किया था, जिसे प्रत्येक सीट पर रखा जा सकता है। वह पूरी तरह बड़े किप की तरह ही कार्य करता है। कार्य के पश्चात वह स्वतः ही बन्द हो जाता है अर्द्धसूक्ष्म विधि द्वारा, जो हायर सकेण्डरी एवं इण्टरमीडिएट कक्षाओं के लिए विकसित की गयी, उसमे परखनली के स्थान पर एर्लेनमेयर